प्रकृति और हम

प्रकृति और मानव का पुराना संबंध है। प्रकृति ही मनुष्य की आवश्यकताएँ पूरी करती आ रही है। मनुष्य सदा से ही पेड़-पौधों पर आश्रित रहा है। पेड़-पौधे प्रकृति की एक अनुपम सौगात हैं। पेड़-पौधों ने सदा मानव को संरक्षण दिया है। पेड़-पौधे हमें फल-फूल, शुद्ध हवा, लकड़ी तथा ईंधन देते हैं। पर आज मनुष्य लालच में आकर लगातार पेड़-पौधों को काटकर वनों को नष्ट करता जा रहा है। इससे वह स्वयं अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। उन्हें बिना सोचे-समझे काटता जा रहा है, जिसके कारण पर्यायवरण में बदलाव आ रहा है और प्रदूषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण घटे, बाढ़ न आए, अकाल न पड़े, इसके लिए हमें पेड़ लगाने होंगे। पेड़ों पर हम तथा पक्षी जगत निर्भर है। पेड़ों के कटने से अनेक पशु-पक्षियों की जातियाँ भी समाप्त हो रही हैं। मनुष्य यदि इसी प्रकार पेड़-पौधे काटकर प्रकृति को हानि पहुँचाता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह हरी-भरी प्रकृति और वन बंजर हो जाएँगे। अतः हमें समय रहते ही सचेत होना पड़ेगा।